ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

# आधुनिक हिन्दी कविता में लोकजीवन के विविध पक्ष

# Miscellaneous Aspects of Folk Life in Modern Hindi Poetry

Paper Submission: 08/09/2020, Date of Acceptance: 21/09/2020, Date of Publication: 25/09/2020

**ऋषिपाल**
सह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता
महाविद्यालय, कौल, कैथल,
हरियाणा, भारत

**सारांश**

लोक संस्कृति की पहचान हमारे लोक जीवन की बहुरंगी गतिविधियों में ही अंकित है। 'लोक जीवन' से मतलब उस जीवन से है जो शहरों, जंगलों, पर्वतों और टापुओं में निवास करता है एवं अपनी परम्पराओं और रीति–रिवाजों पर आस्थाशील होने के कारण अनपढ़ एवं कम सभ्य कहा जाता है।

The identity of folk culture is embedded in the multicolored activities of our folk life. 'Folk life' refers to the life that resides in cities, forests, mountains and islands and is deemed to be illiterate and less civilized due to its faith in conventional traditions and customs.

**मुख्य शब्द :** लोक जीवन, लोक संस्कृति, रीति–रिवाज, हिन्दी कविता।
Folk Life, Folk Culture, Traditions and Customs, Hindi Poetry.

**प्रस्तावना**

डॉ॰ कुन्दन लाल उप्रेती ने 'लोक' के सम्बन्ध में इस प्रकार विचार व्यक्त किए हैं – ''लोक' ज्ञानाहं बौद्धिक चेतना, सुसंस्कृत तथा परिष्कृत रुचि वाले मनुष्यों के समुदाय से इतर अभिजात संस्कार एवं शिक्षा से हीन एक ऐसा समुदाय है, जो आदिम प्रवृत्तियों तथा परम्पराओं की धारा में बहता हुआ अकृत्रिम जीवन जीने में विश्वास रखता है।''[1] लोक जीवन ज्यादा मौलिक एवं स्वाभाविक है। हमने अपने जीवन में स्वयं जो कार्य सोच कर किया व उसको सहन किया, उसी का प्रतिफल हमारा लोकजीवन है। 'लोक' देश की अनमोल निधि है। खेती, साहित्य, कला के विविध रूप, भाषाएँ और शब्दों के भण्डार, नाच, संगीत आदि सभी कुछ भारतीय लोक में ओत–प्रोत है। डॉ॰ सत्येन्द्र के शब्दों में ''लोक' मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य, संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य चेतना और पांडित्य के अहंकार से शून्य है। जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है। ऐसे लोक की अभिव्यक्ति में जो तत्त्व मिलते हैं, वे 'लोक तत्त्व' कहलाते हैं।''[2]

लोक जीवन सुदीर्घ परम्परागत पैतृक उत्तराधिकार में प्राप्त वह प्रारम्भिक जीवन है जो निसर्ग सौन्दर्य, माधुर्य, त्याग, अध्यात्म, स्वाभाविकता आदि अलंकारों से सुशोभित हैं। इसमें किसी प्रकार का बाह्य प्रदर्शन नहीं है। लगातार प्रवाहमान एवं गतिशील लोक जीवन में श्रद्धा और विश्वास की भावना 'लोक' के उत्सवों, अनुष्ठानों तथा उसके अनेक कार्यकलाप में साफ दिखाई देती है। देखा जाए तो मानव को अपने जीवन जीने के लिए तीन प्रमुख जरूरतें पूरी करनी होती हैं – प्रथम घर, दूसरी खाना, तीसरी कपड़े। इन तीनों को पूरा करने के लिए आदमी को बहुत सी व्यवहारिक चीजों की जरूरत होती है। जब उपरोक्त आवश्यकताएँ पूरी हो जाएं तो उसका मन दूसरी वस्तुओं की तरफ जाता है। इसलिए लोक जीवन के सन्दर्भ में हम कपड़े, शृंगार के साधन, पारिवारिक शिष्टाचार आदि का उल्लेख करेंगे।

समाज में नर और नारी शादी करके परिवार पूरा करते हैं। पारिवारिक होना मधुर सम्बन्ध की अनुभूति कराता है। यह अत्यन्त खुशी देने वाली जिम्मेदारी है। पारिवारिक परिवेश हमें जीवन में हंसना–रोना, सुख–दुःख, खुशी–विश्वास आदि अनुभूतियों से जीवन को जीने के लायक बनाता है। बील्स तथा हाइजर के अनुसार, ''परिवार एक सामाजिक समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके सदस्य रक्त सम्बन्धों द्वारा बद्ध होते हैं।''[3] हम कह सकते हैं कि परिवार समाज की आधारशिला है तथा पारिवारिक जीवन ही सामाजिक जीवन का रूप लेता है। संयुक्त परिवार प्रणाली भारतीय समाज और

संस्कृति की रीढ़ रही है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार प्रणाली चली आ रही है। इस प्रणाली में घर का मुखिया ही समस्त परिवार का मार्गदर्शन, संचालन एवं संरक्षण करता है। कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने काव्य में इसका उल्लेख बहुत ही सुन्दर शब्दों में किया हैं – मेरी पत्नी मीठी वाणी बोलने वाली है, मेरे बच्चे मेरे वश में हैं, मैं एक अनुशासित परिवार का मुखिया हूँ।[4]

भारतीय 'लोकजीवन' में नारी पति को अपना सर्वस्व मानती है। वह उसके लिए सब कुछ समर्पित कर देती हैं ''दम्पत्ति' शब्द की व्याख्या करते हुए 'अमर कोष' में 'पति और पत्नी' को 'दम्पत्ति' कहा गया है तथा 'दम्पत्ति' के पर्यायवाची शब्दों के रूप में 'जयंती', 'जायापती' और 'भार्यापति' शब्द दिए गए हैं।[5] भारतीय लोक जीवन में नर और नारी का स्थान बराबर का है। 'महाभारत' तथा 'शतपथ ब्राह्मण' में स्त्री को पुरुष की आत्मा बताया है, अतः नारी नर की सहभागिनी होती है। पति–पत्नी का रिश्ता पवित्र होता है। दोनों आजीवन एक दूसरे के प्रति समर्पित होने का भाव रखते हैं। इसका एक सुन्दर उदाहरण 'जननायक' महाकाव्य में देखते हैं – पति ने पत्नी को समझाया – शुभे! हृदय में हो तुम मेरे। बुरे मार्ग से बच जाता हूँ देवी! अमर प्यार से तेरे।। पत्नी ने यह कहा प्यार से – उन्नति पथ में सदा साथ हूँ। तुम ईश्वर हो, मैं श्रद्धा हूँ, चरणों की सेविका नाथ हूँ।।[6]

भारतीय लोक जीवन में प्राचीन काल से ही नारी आदमी के साथ सहचरी के रूप में बहुत से कटु अनुभवों व विकट स्थितियों में जीवन यापन करती आ रही है। पुरुष नारी पर मनमाने अत्याचार करता आ रहा है। भारतीय समाज में विधवा का जीवन तो बहुत ही उपेक्षित एवं तिरस्कृत माना जाता है। यहां तक कि शुभ कार्यों में उसका सम्मिलित होना अमंगल माना जाता है – लते की पठरी सी लुढ़की रहती। रहती सूने गृह कोने पर। ढुढी पतझर की टहनी सी, तिसे न मेटेगा कुसुमाकर।[7] भारतीय लोकजीवन में शादी विवाह के उपरान्त माँ–बाप का पुत्री पर कोई अधिकार नहीं रहता। उसका पति ही उसका सर्वस्व होता है। वह चाहे उसे सम्मान से रखें या फिर उसे किसी भी प्रकार से प्रताड़ित करे। उसका पति अपनी इच्छानुसार उसके साथ बर्ताव कर सकता है – तुम चाहते तो उसे झोटा पकड़कर, घसीट ला सकते थे, आखिर वह तुम्हारी ब्याहता थी।[8]

भारतीय समाज में पिता की मृत्यु के बाद उसका बेटा पिता के समस्त अधिकार प्राप्त कर लेता है। वही उसका उत्तराधिकारी बन जाता है। उत्तराधिकार में पिता की चल व अचल पैतृक सम्पत्ति उसके पुत्रों में बंट जाती है। 'सुनीता जैन' अपनी कविता 'बोलो तुम ही' में इसका बहुत ही सुन्दर एवं मार्मिक उल्लेख करते हुए लिखती हैं कि – कल बेटों में / तकसीम हो गया। परसों उस पर / गैरों का ताला होगा। और भाइयों के बेटे बेटी। ले जायेंगे गिन /अपना हिस्सा।[9] भारतीय लोक जीवन में प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने राष्ट्र की रक्षा करें। राष्ट्र प्रेम उसके मन में भरा हो। इसी प्रकार ''नागरिक के कर्तव्य केवल देश के प्रति ही नहीं होते अपितु अपने परिवार, गांव, नगर, राज्य और विश्व के प्रति भी होते हैं। कर्तव्यों का पालन करते हुए वह मानव की अधिक से अधिक सेवा करता है।[10] मानव जीवन में परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व का कर्तव्य मानकर चलते हैं। पिता की मृत्यु के उपरान्त माँ अपने बच्चों को पालती है – स्वामी मुझको मरने का भी दे न गए अधिकार। छोड़ गए मुझ पर अपने उस बेटे का सब भार।[11]

भारतीय लोक जीवन में भारतीय नारी पतिव्रता धर्म का पालन बहुत ही निष्ठा से निभाती है। अपने पति को ही वह ईश्वर मानती है। उसको अपना सर्वस्व मानकर आजीवन उसकी सेवा करते हुए अपने को सौभाग्यशाली मानती है – भारतीय नारी पति का घर, मरने पर ही छोड़ा करती। डोली में नाता लाती है, अर्थी पर ही तोड़ा करती।[12]

भारतीय स्त्री विवाह के उपरान्त ससुराल को ही अपना घर मानकर पति, ससुर, सास, ननद, बेटी, बेटों की सेवा करके, सभी के लिए खाना बनाकर, झूठे बर्तन साफ करके, कपड़े धोकर सबकी सेवा करके अपनी परवाह न करते हुए भी खुशी से अपना जीवन यापन करती है। सभी का भला मनाती है। अपनी भूख, प्यास की चिन्ता छोड़ पति की सेवा को ही अपना धर्म, कर्म मानती है – पति को देव समान हम माने। बच्चों की भी दासी हैं। सेवा सदा कर नहीं सोचती, भूखी हैं या प्यासी है।[13]

भारतीय लोक जीवन में नारी अपने पति के साथ पारिवारिक कार्यों में हाथ बंटाती है। वह अपने घर के समस्त कार्यों में अपनी भूमिका अहं समझ कर सारा दिन व्यस्त रहती है – स्त्री अब हो गई सयानी, बीनती है कहाढ़ती है, कूटती है, पीसती है। डालियों के सिले अपने रूखे हाथों भीसती है, घर बुहारती है, कर कर फेंकती है, और घड़ों भरती है पानी।[14] लोकजीवन में ग्राम वधूओं को पानी लेने के लिए नदी, तालाब व कुएँ आदि पर जाकर पानी लेकर आना पड़ता है। वे सभी गांव की बहुएँ एवं युवतियाँ नये–नये रंग–बिरंगे वस्त्र धारण करके गीत गाती हुई पानी भरने के लिए घर से निकलती हैं – रंग बिरंगी चूनरी ओढ़े पानी भरती पनिहारिनें, और कालिदास की पूजा की एक कमल, उसकी शिराओं में अपनी पूरी अस्मिता उड़ेल देता है।[15] भारतीय लोकजीवन में यह मान्यता है कि सुबह सवेरे चौका चूल्हा आदि लीपना, सुबह का नाश्ता खाने से पूर्व अति आवश्यक है। इससे घर में सुख–शांति व समृद्धि रहती है। इसका उल्लेख ''मैं हूँ, यहाँ हूँ' कविता में मिलता है – मुँह अंधेरे जग गयी माँ, झाड़ू पानी हाथ में लेकर किया है पूरे घर को साफ।[16]

लोक जीवन में भारतीय समाज में नारी बहुत घरेलु कार्यों को करती है। वह अपने परिवार के प्रति समर्पित होकर दिन रात मेहनत करती है। काम को पूजा मानती है। अपना सर्वस्व परिवार को ही मानती है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता में इसका सुन्दर वर्णन मिलता है – मैं उन हाथों को चूम लेना चाहता हूँ, यद्यपि उन्होंने मेरे अश्रु नहीं पोंछे, फिर भी सुबह से शाम तक, वे आंधी से भरी घर की धूल को साफ करते रहे। सब्जी छीलते, अंगीठी सुलगाते, रोटियाँ सेंकते, कपड़े धोते सुखाते, इस्तरी करते, बच्चों को नहलाते–धुलाते।[17]

देखा जाए तो भारतीय लोकजीवन में किसानों की दशा भी अत्यन्त दयनीय होती है। वे दिन भर खेत में काम करते हैं। खेती के कार्यों से उसे फुर्सत नहीं। खेत में दिन–रात मेहनत करके वह अपने परिवार का पेट भरता है। स्वयं उसे आराम नहीं मिलता। उसके पास धन, दौलत नहीं होती। जबकि अनाज पैदा करके वह सारे देश का पेट भरता है। उसके परिश्रम से ही उद्योग–धंधे एवं कुटीर उद्योग आदि चलते हैं – किया परिश्रम रात दिवस, दो कौर मिले संतुष्ट हुए। सुख के साधन जमींदार के किन्तु और कुछ पुष्ट हुए। जोते बोयें और रहे, बस, इतना ही अधिकार इन्हें। जमींदार स्वामी इस पर भी था धरती से प्यार उन्हें।[18]

प्राचीन काल में भारतीय लोक जीवन मे बच्चों को शिक्षा देने के लिए गुरु जन आश्रम में जाते थे। वे विद्याश्रम कहलाते थे। वही प्रथा आज भी चली आ रही है। आज भी गुरुकुलों के बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं – शिक्षा पाते गुरुकुल में देश के ये कुमार। कैसा छाया सघन धन सा शिक्षकों का दुलार।[19]

भारतीय लोकजीवन में किसी दूसरे आदमी से बातचीत करते समय ठीक व्यवहार, सद्भाव व मान–सम्मान देना लोक शिष्टाचार के लिए आवश्यक माना जाता है। इसलिए भारत देश में अतिथि को भगवान मानते हैं। इसी प्रकार स्त्रियाँ लोक जीवन में पुरुषों से घूंघट निकालती हैं। बेटियाँ व बहुएँ घर के बुजुर्गों के सामने सिर ढक कर चलती हैं। हाथ जोड़ कर बड़ों से आशीर्वाद लेती हैं। भारतीय लोक जीवन में नारी के सिर से खिसकता हुआ साड़ी का पल्ला उसकी अल्हड़ता का सूचक है – सिर से साड़ी का पल्ला यह, खिसक रहा है जरा–जरा। अहिनों में आकर देखों कैसा अल्हड़पन निखरा।[20]

भारतीय लोकजीवन में नव नवेली दुल्हन ही नहीं अपितु सभी बहुएँ पर्दा प्रथानुसार जेठ, ससुर, बुजुर्गों आदि को घूंघट करती आ रही है। घूंघट करना स्त्री का पति के घर में विशेष शिष्टाचार रहा है। शैलेश जैदी लिखते हैं – राधा को मैं घूंघट काढ़े, अक्सर मन की चौखट पर पाता हूँ। मेरी काया में मथुरा वृन्दावन की गलियाँ फैली हैं।[21]

## निष्कर्ष

सारांशतः हम कह सकते हैं कि आधुनिक हिन्दी कविता में अनेक कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से लोक जीवन के विविध पक्षों को अपनी रचनाओं में उभारा है। लोक जीवन के सभी पक्षों को आधुनिक हिन्दी कविता के कवियों द्वारा अभिव्यक्ति दी गई है। निश्चित ही मानव जीवन के दो चरण हैं – एक तो सभ्यता के विकास से पहले का आदिम, साधारण एवं स्वाभाविक जीवन तथा दूसरा सभ्यता के विकास के बाद का वैज्ञानिक जीवन। इसी साधारण एवं स्वाभाविक जीवन को लोक जीवन तथा वैज्ञानिक जीवन को शिष्ट अथवा कृत्रिम जीवन के धीरे–धीरे एक रस हो जाने के कारण कवि अपनी कृति में नवीनता लाने के लिए लोक जीवन की ओर मुड़ता है। कविता में लोक जीवन का चित्रण करने के लिए वह वातावरण मे तत्त्व को विशेष सजीव करके अलग से पहचान योग्य बनाता है। अतः हम उपरोक्त विवेचन के आधार पर कह सकते हैं कि आधुनिक हिन्दी कविता में लोक जीवन के विविध पक्षों पर कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति के सभी पक्षों का उजागर किया है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ॰ कुन्दन लाल उप्रेती, लोक साहित्य के प्रतिमान, पृ॰ 08*
2. *डॉ॰ सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, पृ॰ 03*
3- *Beals and Hoizer, An Introduction to Anthropology, p. 382*
4. *विश्व नाथ प्रसाद तिवारी, बेहतर दुनिया के लिए, पृ॰ 78*
5. *दम्पती, जयंती, जायापती, भार्यापती च तौ, अमर कोष, काण्ड 2, श्लोक 38, पृ॰ 214*
6. *रघुवीर शरण मित्र, जननायक पृ॰ 93*
7. *विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, बेहतर दुनिया के लिए, पृ॰ 40*
8. *भारत भूषण अग्रवाल, धर्मयुद्ध, 31 मार्च*
9. *सुनीता जैन, बोलो तुम ही, पृ॰ 86*
10. *वीरकेश्वर प्रसाद सिंह, नागरिक शास्त्र एवं भारतीय संविधान, पृ॰ 70*
11. *राघव चेतन राय, वह गिरी बेचने वाला, पृ॰ 17*
12. *रघुवीर शरण मित्र, जननायक, पृ॰ 41*
13. *पूरन मुद्गल, अश्व लौट आयेगा, पृ॰ 18*
14. *अशोक वाजपेयी, एक पतंग अनन्त में, पृ॰ 78*
15. *प्रताप सहगल, अलग अलग होने के बावजूद, पृ॰ 14*
16. *भारत यायावर, मैं हूँ, यहाँ हूँ, पृ॰ 25*
17. *सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, गर्म हवाएँ, पृ॰ 74*
18. *उपेन्द्र नाथ अश्क, बरगद की बेटी, पृ॰ 62–63*
19. *बालकृष्ण शर्मा नवीन, उर्मिला, पृ॰ 20*
20. *बाल कृष्ण नवीन हम विषपायी जन्म के, पृ॰ 386*
21. *शैलेश जैदी, सूरज एक सलीब, पृ॰ 80*